(1) द्रव्य (Substance) - (9)

गुण + कर्म का आश्रय

जैन - द्रव्य, गुण एवं पर्याय का आश्रय होता है →

→ द्रव्य की परिभाषा —

"क्रिया - गुणवत् समवायिकारणमिति द्रव्यलक्षणम्"

अर्थात

→ द्रव्य वह है जो गुण तथा कर्म का आश्रय हो और अपने कार्यों का समवायी कारण (उपादान कारण) हो। Ex: —

UGC — कपड़े के लिए सूत समवायी / उपादान कारण है।

विभु - सर्वव्यापी

द्रव्य की विशेषता: —

- द्रव्य स्वतंत्र सत्ता है
- गुण और कर्म का आश्रयभूत तत्व है
- अपने कार्य का समवायी या उपादान कारण है
- द्रव्य स्वरूपतः नित्य, स्वतंत्र एवं विशेष-युक्त है।
- यह विभु या अणुरूप है।

द्रव्य कारणरूप - नित्य, कार्य रूप - अनित्य

* द्रव्य की संख्या नौ (9) है जिसमें जड़ एवं चेतन दोनों सम्मिलित हैं —

(1) पृथ्वी
(2) जल
(3) वायु
(4) अग्नि
(5) आकाश

— पंचभूत (Five Physical elements); सभी का गुण क्रमशः गन्ध, रस, स्पर्श, रूप, शब्द। मूलरूप में नित्य परमाणु रूप हैं।

(6) दिक्
(7) काल
(8) आत्मा → जीवात्मा अनेक, → परमात्मा / ईश्वर
(9) मन

* गुण (Quality) - (24)

→ गुण स्वतंत्र नहीं द्रव्य आश्रित होता है।

→ गुण के अन्तर्गत भौतिक एवं मानस दोनों प्रकार के गुण आते हैं।

→ कणाद ने गुणों की संख्या सत्रह (17) बताई पर प्रशस्तपाद ने इसमें सात (7) और जोड़ कर गुणों की संख्या चौबीस (24) कर दी है।

1 रूप, 2 रस, 3 गंध, 4 स्पर्श, 5 शब्द, 6 संख्या, 7 परिमाण, 8 पृथक्त्व, 9 संयोग, 10 विभाग, 11 ~~[illegible]~~ परत्व, 12 अपरत्व, 13 बुद्धि, 14 सुख, 15 दुःख, 16 द्वेष, 17 प्रयत्न, 18 गुरुत्व, 19 द्रवत्व, 20 स्नेह, 21 संस्कार, 22 धर्म, 23 अधर्म, 24 [illegible]

* कर्म (Action) (5)

कर्म का आधार द्रव्य है, पर गुण से भिन्न है।

कर्म पाँच प्रकार के होते हैं:—

कर्म:— (i) जो द्रव्य में समवेत है (ii) जो गुणों से शून्य है (iii) जो संयोग और विभाग का असमवायिकारण है

(a) उत्क्षेपण (ऊपर फेंकना)
(b) अपक्षेपण (नीचे फेंकना)
(c) आकुञ्चन (सिकोड़ना)
(d) प्रसारण (फैलना)
(e) गमन (चलना)

* सामान्य (Universality or Generality)

→ सामान्य वह पदार्थ है जिसके कारण एक ही प्रकार के विभिन्न व्यक्तियों को एक जाति के अन्दर रखा जाता है। Ex — मनुष्यत्व, या गोत्व आदि।

- सामान्य नित्य, एक, अनेकानुगत है।

सामान्य के सम्बन्ध में तीन मत हैं:—

(1) नामवाद / अपोहवाद / व्यक्तिवाद — बौद्ध
(2) प्रत्ययवाद — जैन + वेदान्त
(3) वस्तुवाद — न्याय + वैशेषिक

* सामान्य के तीन भेद होते हैं:—

UGC J-13

(1) पर — सबसे बड़ा ; Ex — सत्ता Being-hood
(2) अपर — सबसे छोटा Ex — घटत्व Poteness
(3) परापर — मध्यम Ex — द्रव्यत्व Substantiality

(i) पर सामान्य संसार की प्रत्येक वस्तु में सर्वाधिक व्यापक सामान्य है। इसके अन्तर्गत अस्तित्व या सत् को सम्मिलित किया गया है। क्योंकि संसार की प्रत्येक वस्तु सत् है। अतः यह सबसे बड़ा सामान्य है।

(ii) अपर इसे निम्नतर सामान्य भी कहा जाता है क्योंकि यह सबसे छोटा होता है। Ex:- गोत्व, मनुष्यत्व, घटत्व इत्यादि।

(iii) पर-अपर - जिसकी व्यापकता पर से कम तथा अपर से ज्यादा होती है।

पदार्थ — उत्पत्ति
परमाणु का संयोग
उत्पत्ति
वियोग

भाव — अभाव

- द्रव्य (नित्य) 9
  1. पृथ्वी
  2. जल
  3. वायु
  4. अग्नि
  5. आकाश
  6. मन
  7. आत्मा
  8. दिक
  9. काल
- गुण (अनित्य) 24
  - कि जड़ + चेतन
- कर्म
  - उत्क्षेपण
  - अपक्षेपण ↓
  - प्रसारण (फैलना)
  - गमन
  - संकुचन (सिकुड़ना)
- सामान्य
  - मनुष्यत्व
  - नामवाद - बौद्ध
  - प्रत्ययवाद - जैन वेदान्त
  - वस्तुवाद - न्याय, वैशेषिक
  - पर - ईश्वर नित्य
  - अपर - मनुष्यत्व
  - परापर - मनुष्य
- विशेष
  - के सामान्य का अभाव है और नित्य द्रव्य में रहता है।
- समवाय
  - संयोग + समवाय

[अभाव]

- संसर्गाभाव (पानी में अग्नि का अभाव)
  1. प्रागभाव — मिट्टी में घड़े का अभाव
  2. ध्वंसाभाव (घड़ा नष्ट होने पर घड़ा का अभाव)
  3. अत्यन्ताभाव — त्रिकालिक अभाव, वायु में रूप का अभाव
- अन्योन्याभाव — तादात्म्य का अभाव (घोड़ा गाय नहीं है)